मशाल

विद्रोह कर इस कारवां से राह नूतन अब पकड़ तू।
व्यभिचारी भाई-बन्दों से, विच्छेद कर दे बंधन तू।।

इस जर्जर बस्ती में बदलाव की मंशा छोड़ दे तू।
जलाकर राख कर इसे, बीज ओजस खोज ले तू।।

बालू पे निशान बनाकर न फुसला स्वयं को तू।
समय की दीवार पर, कुछ कर दिखला आज तू।।

सोच-सोच हाथ मलता ढह जायेगा एक दिन तू।
संग आज शक्ति है, संग्राम कर दे घातक तू।।

आइने के साक्षात्कार से कबतक मुंह छिपाएगा तू।
मुखोटों से दिल्लगी छोड़, आखें मिला स्वयं से तू।।

अप्रभावी हुआ वो मोर्चा जिसे कहता है अपना तू।
म्यान से तलवार निकाल, प्राण इसमें फूँक दे तू।।

कोलाहल के वातावरण में एकाग्र होकर सोच तू।
अंतर्मन की आवाज़ को, बुलंदियों पर ले जा तू।।

समीर खांडेकर
30.05.2013